ISSN: 3048-9423(Online)
Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS)
© NIJMS | Vol. 1 | Issue 2 | October-November 2024
Available online at: https://nijms.com/

भारतीय ज्ञान प्रणाली का विश्लेषण

डॉ. शैलेश कुमार यादव[1] एवं अमरीन शमशुल[2]

[1] सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

[2] शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

शोधसार :

भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य समकालीन सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए अनुसंधान को सक्रिय रूप से समर्थन देना और उसे आगे बढ़ाना है। यह प्रणाली वैदिक साहित्य, जैसे वेद और उपनिषद, की समृद्ध परंपरा में निहित है, और इसे डिजिटल लर्निंग प्लेटफार्मों में एकीकृत करने की दिशा में काम किया जा रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली पाठ्यक्रमों पर कक्षा में शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए, शिक्षकों के प्रशिक्षण और उन्मुखीकरण के लिए विशेष मॉड्यूल तैयार किए जा रहे हैं। इसके तहत, विशिष्ट भारतीय ज्ञान प्रणालियों के विषयों पर केंद्रित शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएंगे। भारतीय ज्ञान प्रणाली में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए ग्रैंड नेशनल चैलेंज, राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं और हैकाथॉन जैसी पहलें शुरू की जाएंगी, और अग्रणी विचारों के लिए प्रोत्साहन प्रदान किए जाएंगे। भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (ICHR) जैसे संस्थानों के माध्यम से वैश्विक संस्थानों के साथ सहयोग किया जाएगा, ताकि भारत-केंद्रित शोध को प्रोत्साहन मिल सके। उच्च शिक्षा संस्थानों (HEIs) में भारतीय ज्ञान प्रणाली की स्थापना के लिए प्रारंभिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। भारतीय ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देने और लोगों तक पहुंचाने के लिए विविध तरीकों का उपयोग किया जाएगा। जन भागीदारी कार्यक्रमों के माध्यम से जनता की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाएगा। युवाओं के लिए कौशल-आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएंगे। भारतीय ज्ञान प्रणाली पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने और उसे वैश्विक स्तर पर प्रसारित करने के लिए तकनीकी साधनों का उपयोग करेगा। इसका मुख्य उद्देश्य विश्व पर्यटन का 10 प्रतिशत हिस्सा हासिल करना है, जिससे युवाओं के लिए रोजगार के व्यापक अवसर उत्पन्न होंगे।

मुख्य शब्द: *भारतीय ज्ञान प्रणाली, कौशल आधारित कार्यक्रम, वैदिक साहित्य, उपनिषद।*

प्रस्तावना-

भारतीय उपमहाद्वीप में हजारों वर्षों से संचित स्वदेशी शिक्षा मुख्य रूप से मौखिक एवं लिखित प्रणालियों के माध्यम से अर्जित की गई है। यह अर्जित ज्ञान का समृद्ध और विविध भंडार भारतीय ज्ञान प्रणाली के रूप में जाना जाता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक व्यवस्थित रूप से हस्तांतरण किया जाता है। वैदिक साहित्य उपनिषद, वेद और उपवेदों पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान और विचार की इस समृद्ध विरासत को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में मान्यता देती है। भारत का ज्ञान विज्ञान और जीवन दर्शन, ज्ञान प्रणालियों, अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण पर आधारित है, हमारी शिक्षा दर्शन, आध्यात्मिकता, विज्ञान, गणित, साहित्य, कला, चिकित्सा और सामाजिक संगठन ऐसे कई क्षेत्र हैं जिन्हें मनन करने और व्यवहार में लाने का पूर्ण प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा किया गया है। इसने भारत की शास्त्रीय और अन्य भाषाओं को भी प्रभावित किया है इसमें प्राचीन भारत का ज्ञान उसकी सफलताएं और चुनौतियां शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण वास्तव में जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित भारत की भविष्य की आकांक्षाओं की भावना शामिल है। भारतीय ज्ञान प्रणाली ज्ञान के भंडार के रूप में कार्य करती है और भारतीय समाज के विभिन्न आयाम भौतिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक को आकर भी देती है **(खान,एस.2024)**।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है, जिसमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र, कला, साहित्य, और धर्म का गहन ज्ञान इत्यादि समाहित है। वैदिक युग से प्रारंभ होकर, इस प्रणाली ने वेदों और उपनिषदों के माध्यम से धार्मिक, दार्शनिक, और वैज्ञानिक ज्ञान को विकसित किया। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों ने नैतिकता, धर्म और समाज पर प्रकाश डाला। बौद्ध और जैन धार्मिक परंपराओं ने सामाजिक और नैतिक मूल्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुप्त युग में गणित और खगोलशास्त्र के क्षेत्र में आर्यभट्ट और वराहमिहिर जैसे वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण प्रगति की। मध्यकाल में भारतीय और इस्लामी ज्ञान का संगम हुआ, जिससे भारतीय विज्ञान, कला, और दर्शन के क्षेत्रों में नई दिशाएँ खुलीं। औपनिवेशिक युग में पश्चिमी प्रभाव के बावजूद, ज्योतिबा फुले, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद और रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे विचारकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक रूप में पुनःस्थापित किया। आयुर्वेद, शून्य की खोज, दशमलव प्रणाली, और भारतीय दर्शन जैसे क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान प्रणाली का वैश्विक योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। **(पांडे एन.आर.2014)**

भारतीय ज्ञान प्रणाली का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य-

भारतीय ज्ञान प्रणाली, जिसे भारतीय विचारधारा या हिंदू दर्शन के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन काल से विकसित और पारित किए गए ज्ञान, विश्वासों और प्रथाओं के विशाल समूह को संदर्भित करता है। यह ज्ञान प्रणाली प्राचीन वैदिक शास्त्रों में गहराई से निहित है और हजारों वर्षों में विकसित हुई है, जिसने भारत के सांस्कृतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक परिदृश्य को आकार दिया है **(मांडवकर,पी.2024)**। भारतीय ज्ञान प्रणाली की उत्पत्ति का पता प्राचीन वैदिक काल से लगाया जा सकता है, जो लगभग 1500 ईसा पूर्व से शुरू हुआ था। हिंदू धर्म के सबसे पुराने ग्रंथ वेदों की रचना इसी समय की गई थी और इन्हें भारतीय ज्ञान और दर्शन का आधार माना जाता है। वेद भजनों, अनुष्ठानों और मंत्रों का एक संग्रह है जो लिखे जाने से पहले सदियों तक पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से प्रसारित होते रहे। इनमें यज्ञ अनुष्ठानों, ब्रह्मांड विज्ञान, नैतिकता और आध्यात्मिकता के बारे में व्यापक ज्ञान शामिल है। प्रारंभिक वैदिक काल के बाद उपनिषदों का उदय हुआ, जो दार्शनिक ग्रंथ हैं जो वेदों के गहन अर्थ और महत्व को स्पष्ट करते हैं। उपनिषदों ने आत्म-साक्षात्कार की अवधारणा या किसी के वास्तविक स्वरूप की प्राप्ति को ईश्वर और ब्रह्मांड के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया। उन्होंने कर्म की अवधारणा की नींव भी रखी, जो कारण और प्रभाव का नियम है जो जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र को नियंत्रित करता है। लगभग 500 ईसा पूर्व, उपनिषदों की अवधि ने भारत में कई विचारधाराओं के उद्भव का मार्ग प्रशस्त किया, जिनमें से प्रत्येक की अपनी व्याख्याएँ और दार्शनिक प्रणालियाँ थीं। इनमें वेदांत, सांख्य, योग और जैन धर्म शामिल हैं। इन विचारधाराओं ने मूल वैदिक शिक्षाओं में नए विकास और व्याख्याएँ लाईं, जिससे भारतीय ज्ञान और दर्शन में विविधता आई। सबसे प्रभावशाली विचारधाराओं में से एक वेदांत थी, जो उत्तर-वैदिक काल में उभरी और आत्म-साक्षात्कार तथा परम वास्तविकता की अवधारणाओं पर केंद्रित थी। इसने ब्रह्मांड की अद्वैत प्रकृति और सार्वभौमिक चेतना के अस्तित्व में विश्वास पर जोर दिया। एक अन्य महत्वपूर्ण विचारधारा, बौद्ध धर्म, छठी शताब्दी ईसा पूर्व में उभरा और पूरे एशिया में फैल गया, जिसने भारतीय ज्ञान और दर्शन को बहुत प्रभावित किया **(दास, 2021)**। बौद्ध धर्म और जैन धर्म के उदय के साथ, प्राचीन भारत में प्रचलित जाति व्यवस्था कमजोर पड़ने लगी। इन नए धर्मों ने पारंपरिक ब्राह्मणवादी व्यवस्था को चुनौती दी और महत्वपूर्ण सामाजिक और धार्मिक सुधार लाए। परिणामस्वरूप, जाति व्यवस्था धीरे-धीरे एक वर्ग व्यवस्था में बदल गई, जिससे निचली जातियों के लोगों के लिए शिक्षा और ज्ञान तक पहुँच के अवसर खुल गए **(बर्मन, 2023)**। **(बिस्वास, 2016)** के अनुसार मध्यकाल में इस्लामी आक्रमणों के बढ़ने और यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के आगमन के साथ, भारतीय ज्ञान को चुनौतियों का सामना करना पड़ा और इसमें महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस्लामी शासक अपनी परंपराएं और प्रथाएं लेकर आए और यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने पश्चिमी शिक्षा और विचारों की शुरुआत की, जिससे भारतीय और पश्चिमी दर्शन का मिश्रण हुआ। इन परिवर्तनों के साथ भी, भारतीय ज्ञान प्रणाली फलती-फूलती और अनुकूलित होती रही। 15वीं और 16वीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन ने ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम पर जोर दिया, जबकि 15वीं शताब्दी के अंत में सिख धर्म के उदय ने हिंदू धर्म और इस्लाम के तत्वों का संश्लेषण किया। 1947 में देश को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता मिलने के साथ ही भारतीय ज्ञान और दर्शन को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने के लिए नए सिरे से प्रयास किए गए। स्वतंत्र भारत के संस्थापकों ने देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के महत्व को पहचाना। परिणामस्वरूप, भारतीय ज्ञान की रक्षा और संवर्धन के लिए कई संस्थानों की स्थापना की गई और प्राचीन शास्त्रों और दर्शन को शिक्षा और समाज में प्रमुख स्थान दिया गया **(मोनिका बोटा-मोइसिन, 2021)**। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित और मजबूत करने के प्रयास किए गए। विभिन्न विषयों में अनुसंधान और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) जैसे संस्थानों की स्थापना की गई। **(मांडवकर, 2023)** के अनुसार आज, भारतीय ज्ञान प्रणाली पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति का जीवंत मिश्रण है। भारतीय विद्वान और संस्थान विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, गणित, दर्शन, साहित्य और कला सहित विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देना जारी रखते हैं। भारतीय ज्ञान और दर्शन निरंतर विकसित और समृद्ध होते जा रहे हैं,

कई आधुनिक विचारक और विद्वान प्राचीन ग्रंथों की नए तरीकों से खोज और व्याख्या कर रहे हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली ने विज्ञान, गणित, चिकित्सा, साहित्य और कला जैसे विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है और महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रखा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के निम्नलिखित महत्वपूर्ण पहलु हैं-

दर्शन और आध्यात्मिकता-

भारतीय दर्शन अस्तित्व, नैतिकता, चेतना और वास्तविकता के मूलभूत प्रश्नों की गहन जांच करता है। इन विषयों पर विभिन्न दार्शनिक प्रणालियों में बौद्ध धर्म, सांख्य, योग, न्याय, वेदांत और वैशेषिक विचारधाराएं शामिल हैं। धर्म (कर्तव्य या न्याय) और मोक्ष (मुक्ति की खोज) भारतीय दर्शन के प्रमुख आधार स्तंभ हैं। **(मांडवकर,पी.2024)**

वेद और उपनिषद-

हिंदू दर्शन और आध्यात्मिकता का आधार वेदों पर है, जो विश्व के सबसे प्राचीन धर्मग्रंथों में से हैं और 3,000 वर्ष से भी पुराने माने जाते हैं। उपनिषद, जो वास्तविकता और आत्मा की प्रकृति की गहराई से जांच करते हैं, वैदिक दर्शन की सर्वोच्च अभिव्यक्ति माने जाते हैं। **(पोलाक,एस.2021)**

योग और ध्यान-

योग एक शारीरिक और आध्यात्मिक अभ्यास है जिसका उद्देश्य अभ्यासकर्ता को परमात्मा के साथ एकता में लाना है। इसमें साँस लेने के व्यायाम, आसन कहे जाने वाले आसन और प्राणायाम कहे जाने वाले ध्यान शामिल हैं।

गणित और विज्ञान-

बीजगणित, ज्यामिति, त्रिकोणमिति और शून्य की धारणा में महत्वपूर्ण प्रगति भारतीय गणितज्ञों द्वारा विकसित की गई थी। प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान फला-फूला, वैज्ञानिकों ने ब्रह्मांड की बेहतर अवलोकन पद्धतियाँ और गणितीय प्रस्तुतियाँ विकसित कीं। **(महादेवन,बी.,भट,आर.वी.और नागेन्द्र,पी.आर.एन.2022)**

साहित्य और कला-

भारतीय साहित्य में हिंदी, तमिल, संस्कृत और कई अन्य भाषाओं में लिखी गई एक व्यापक रचना-धारा शामिल है। कालिदास के नाटक और रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताएँ जैसी शास्त्रीय कृतियाँ, साथ ही रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य, भारतीय साहित्यिक विरासत का समृद्ध प्रतिनिधित्व करती हैं। भारतीय शास्त्रीय नृत्य, संगीत, चित्रकला और मूर्तिकला जैसी कला शैलियाँ भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को उजागर करती हैं। **(मांडवकर,पी.2024)**

सामाजिक और राजनीतिक विचार-

भारतीय दार्शनिकों ने सामाजिक संरचना, नैतिकता और शासन अवधारणाओं का अध्ययन किया है। मनुस्मृति और चाणक्य के अर्थशास्त्र जैसी पुस्तकें प्राचीन भारत के राजनीतिक और सामाजिक सम्मेलनों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

सामान्य तौर पर, विभिन्न दृष्टिकोणों की समृद्धि, विविधता और एकीकरण भारतीय ज्ञान विरासत को परिभाषित करते हैं। यह दुनिया भर में शिक्षाविदों, पेशेवरों और साधकों को प्रेरित करते हुए मानव स्थिति में चिरस्थायी ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा द्वारा किए गए वैज्ञानिक अनुसंधान और खोजें हजारों साल पुरानी हैं। व्यापक व्यापार के परिणामस्वरूप हड़प्पा काल (सिंधु घाटी सभ्यता) के दौरान वजन और माप की एक जटिल प्रणाली विकसित की गई थी। इसके अतिरिक्त, पुरातत्वविदों ने एक आदिम खगोलीय प्रणाली के अस्तित्व का प्रमाण खोजा है। **(वंधे,पी. और टीमने,आर.2024)**

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत विषय-

मानविकी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, कृषि, सामुदायिक ज्ञान प्रणाली, ललित और प्रदर्शन कला, व्यावसायिक कौशल, आदि, जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री है। दिशानिर्देशों के अनुसार, पाठ्यक्रम स्पष्ट होना चाहिए रसायन शास्त्र, गणित जैसे आधुनिक विषयों के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली में पारंपरिक विषयों की मैपिंग भौतिकी, कृषि, आदि। **(वंधे,पी. और टीमने,आर.2024)**

आयुर्वेद और चिकित्सा-

भारत में विभिन्न प्रकार की चिकित्सा प्रणालियां विकसित हुई उनमें से आयुर्वेद आज सर्वाधिक प्रसिद्ध है, इसका अर्थ लंबे जीवन का ज्ञान है। भारत में विज्ञान चेतना के लिए सुश्रुत संहिता और चरक संहिताओं को एक लंबी अवधि में एकत्रित किया गया था 200 से 400 ईसा पूर्व तक आयुर्वेदिक उपचार शामिल है। इन उपचारों का उद्देश्य शरीर के भीतर स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए संतुलन और सद्भाव को बनाए रखना है।

आधुनिक एकीकृत चिकित्सा में कुछ आयुर्वेदिक पद्धतियां शामिल है जैसे हर्बल उपचार और माइंडफूलनेस तकनीक आधुनिक काल में इसे वनस्पति विज्ञान और रसायन विज्ञान के रूप में जाना जाता है। **(महादेवन,बी.,भट,आर.वी.और नागेन्द्र,पी.आर.एन.2022)**

भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्व-

स्वदेशी लोगों ने वैश्विक ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उदाहरण के लिए चिकित्सा और पशु चिकित्सा में अपने पर्यावरण की गहन समझ के साथ। आई.के.एस. को धीरे-धीरे बदलते पर्यावरण के लिए लगातार विकसित और अनुकूलित किया जाता रहा है, पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया जाता है और लोगों के सांस्कृतिक मूल्यों के साथ निकटता से जुड़ा होता है। आई.के.एस. गरीबों की सामाजिक पूंजी भी है, जो उनके अस्तित्व के संघर्ष में निवेश करने, भोजन का उत्पादन करने, आश्रय प्रदान करने या अपने स्वयं के जीवन पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए उनकी मुख्य संपत्ति है। उभरती हुई वैश्विक ज्ञान अर्थव्यवस्था में, ज्ञान पूंजी का निर्माण और उसे जुटाने की किसी देश की क्षमता सतत विकास के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी कि भौतिक और वित्तीय पूंजी की उपलब्धता। आई.के.एस. किसी भी देश की ज्ञान प्रणाली का मूल घटक है। आई.के.एस. स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से गरीबों के लिए समस्या-समाधान की रणनीति प्रदान करता है और वैश्विक विकास ज्ञान में एक महत्वपूर्ण योगदान का प्रतिनिधित्व करता है। ग्रामीण गरीबों की आजीविका लगभग पूरी तरह से उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक विशिष्ट कौशल और ज्ञान पर निर्भर करती है। विकास प्रक्रिया में, भारतीय ज्ञान प्रणाली विभिन्न क्षेत्रों और रणनीतियों में प्रासंगिक है: कृषि, पशुपालन और जातीय पशु चिकित्सा, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग और प्रबंधन, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, निवारक दवा और मनोसामाजिक देखभाल, बचत और उधार, सामुदायिक विकास, और गरीबी उन्मूलन, और स्थानीय अनुभवों और प्रथाओं में क्षमता की अनदेखी करके एक कम उपयोग किया गया संसाधन। वैश्विक स्तर पर तेजी से बदलते प्राकृतिक वातावरण और तेजी से आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ विलुप्त होने का खतरा है। स्थानीय प्रथाएँ लुप्त हो जाती हैं, क्योंकि वे नई चुनौतियों या विदेशी तकनीकों या विकास अवधारणाओं के घुसपैठ के लिए अनुपयुक्त हो जाती हैं जो उन्हें बनाए रखने में सक्षम होने के बिना अल्पकालिक लाभ या समस्याओं के समाधान का वादा करती हैं। इसके अलावा, भारतीय ज्ञान प्रणाली विकास प्रक्रिया के लिए तीन स्तरों पर प्रासंगिक है: **(i)** यह स्थानीय समुदाय के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इस तरह के ज्ञान के वाहक रहते हैं और उत्पादन करते हैं। **(ii)** समुदाय आधारित संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ), सरकारों, दाताओं, स्थानीय नेताओं और निजी क्षेत्र की पहलों सहित विकास संगठनों (डीओ) को स्थानीय समुदायों के साथ अपने संपर्क में आईके को पहचानने, महत्व देने और सराहना करने की आवश्यकता है। अपने दृष्टिकोणों में आईके को शामिल करने से पहले, उन्हें अपने इच्छित उद्देश्यों के लिए उपयोगिता के विरुद्ध इसे समझने और आलोचनात्मक रूप से मान्य करने की आवश्यकता है। **(iii)** आईके वैश्विक ज्ञान का हिस्सा है और इसका अपने आप में एक मूल्य और प्रासंगिकता है। आई.के.एस. को संरक्षित, स्थानांतरित या अपनाया और कहीं और अनुकूलित किया जा सकता है।

शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली-

भारतीय ज्ञान प्रणाली को स्कूल और उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक तरीके से पेश किया जाएगा। भारतीय ज्ञान प्रणाली में आदिवासी ज्ञान के साथ-साथ स्वदेशी और पारंपरिक शिक्षण पद्धतियां शामिल होंगी, जिसमें गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, साथ ही शासन, राजनीति शामिल होंगे। भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर एक आकर्षक पाठ्यक्रम वैकल्पिक के रूप में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए भी उपलब्ध होगा। इसमें सरल गतिविधियाँ शामिल होंगी, जैसे देश के विभिन्न क्षेत्रों में छात्र भ्रमण। इससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा बल्कि भारत की विविधता, संस्कृति और परंपराओं के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों के बारे में जागरूकता और सराहना विकसित करने में भी मदद मिलेगी। इस दिशा में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत देश में 100 पर्यटन स्थलों की पहचान की जाएगी जहां शैक्षणिक संस्थान छात्रों को इन स्थलों और उनके इतिहास, वैज्ञानिक योगदान, परंपराओं, स्वदेशी साहित्य और ज्ञान आदि का अध्ययन करने के लिए भेजेंगे। वर्तमान में, भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार को उत्प्रेरित करने के लिए 32 भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र स्थापित किए गए हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली डिवीजन ने विज़न 2047 विकसित करने के लिए विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों के अग्रणी विचारकों और अभ्यासकर्ताओं को एक साथ लाया है, जो कि समृद्ध भारतीय ज्ञान परंपरा की स्थापना के लिए एक रोडमैप का दस्तावेजीकरण कर रहा है। हमारे वर्तमान समय की चुनौतियों का समाधान करने के लिए आगे के शोध को बढ़ावा देना और सक्षम बनाना आसान होगा। इन पाठ्यक्रमों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने से हमारी शिक्षण प्रणालियों की विरासत को संरक्षित करते हुए प्रेरणा मिलेगी। पारंपरिक और समकालीन दोनों अवधारणाओं के संपर्क के माध्यम से, छात्र अपनी संस्कृति की बेहतर समझ हासिल कर सकते हैं, अपने बौद्धिक विकास का विस्तार कर सकते हैं और अपना आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं। **(नीर,बी.एच.2024)**

निष्कर्ष-

भारतीय ज्ञान प्रणाली में प्राचीन भारत का ज्ञान, उसकी सफलताएँ और चुनौतियाँ, और शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और वास्तव में जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित भारत की भविष्य की आकांक्षाओं की भावना शामिल है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य समग्र स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, प्रकृति, पर्यावरण और सतत विकास जैसे कई क्षेत्रों में समकालीन सामाजिक मुद्दों को हल करने के लिए आगे के शोध का समर्थन और सुविधा प्रदान करना है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के सभी पहलुओं पर अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने, आगे के अनुसंधान और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली को संरक्षित और प्रसारित करने के लिए स्थापित एक अभिनव सेल है। यह हमारे देश की समृद्ध विरासत और पारंपरिक ज्ञान के प्रसार के लिए सक्रिय रूप से संलग्न रहेगा। भारतीय ज्ञान प्रणाली में आदिवासी ज्ञान के साथ-साथ स्वदेशी और पारंपरिक शिक्षण पद्धतियां शामिल होंगी जिसमें गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, साथ ही शासन, राजनीति शामिल होंगे। इससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा बल्कि जागरूकता विकसित करने में भी मदद मिलेगी। भारत की विविधता, संस्कृति और परंपराओं के साथ-साथ राष्ट्र के विभिन्न हिस्सों के ज्ञान की सराहना। इसमें सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों, वैदिक गणित, योग, आयुर्वेद, संस्कृत, भारतीय भाषाओं, भारतीय उपमहाद्वीप में स्थित पवित्र धार्मिक क्षेत्रों, पुरातत्व स्थलों और स्मारकों, भारत की विरासत के क्षेत्र में सीखने के विभिन्न आयामों का प्रसार और ज्ञान प्रदान करना शामिल है। भारतीय साहित्य, भारतीय मूर्तिकला, भारतीय संगीत और नृत्य रूप, नाटक, दृश्य कला, प्रदर्शन कला, शिल्प और शिल्प कौशल आदि। विश्वविद्यालय सभी पाठ्यक्रमों में शिक्षार्थी क्रेडिट या भारतीय ज्ञान प्रणाली को ऐच्छिक रूप से शुरू कर सकते हैं। सभी विषयों के शिक्षार्थियों को पारंपरिक ज्ञान और गौरव के साथ आत्मसात करना। यूजीसी ने पहले ही भारतीय ज्ञान प्रणाली पाठ्यक्रमों से संबंधित पाठ्यक्रम में कुल क्रेडिट का 5 प्रतिशत शामिल करना अनिवार्य कर दिया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्रों की स्थापना के माध्यम से संस्थागत सहायता तंत्र स्थापित करें जो देश के विभिन्न हिस्सों में अनुसंधान, शिक्षा और आउटरीच गतिविधियों को शुरू करने के लिए उत्प्रेरक होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

[1] बिस्वास, ए.के. (2016). मध्यकालीन काल में भारत में शिक्षा का विकास एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण.*इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड एनालिटिकल*,22-32।

[2] बर्मन, आर.के. (2023). कलंक से नव-बौद्ध पहचान तक भारत की अनुसूचित जातियों की बदलती पहचान पर विचार.*सेज जर्नल*।

[3] भट्टाचार्य, ए.(2018). भारत में ज्ञान समाज की ओर.*एकादमिया*।

[4] दास, डी.एस. (2021). वेदांत दर्शन और परम सत्य की खोज में इसका महत्व.*रिसर्च गेट* । https://www.researchgate.net/publication/352401919_Vedanta_Philosophy_and_its_Significance_in_searching_the_Absolute_Truth

[5] खान,एस. (2024). भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय.*इंटीग्रेटेड जर्नल फॉर रिसर्च इन आर्ट एंड ह्यूमैनिटीज*,4(4), 42- 46।

[6] मांडवकर, पी. (2024). भारतीय ज्ञान प्रणाली.*सोशल साइंस रिसर्च जर्नल*,1-6।

[7] महादेवन,बी.,भट,आर.वी.और नागेन्द्र,पी.आर.एन.(2022). भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय : अवधारणा और सिद्धांत.*लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड*,आईएसबीएन-978-93-91818-21-0।

[8] मुंधे, ई. (2023).भारत का ज्ञान भारतीय ज्ञान प्रणाली की खोज, हडपसर, पुणे-28 महाराष्ट्र।

[9] मोनिका बटा मैसिन, आर.एस. (2021). सांस्कृतिक स्थिरता के माध्यम से भारत में निर्मित रीब्रांडिंग भारतीय परिप्रेक्ष्य,खोज और विस्तार.*रिसर्च गेट*।

[10] नीर,बी.एच. (2024). ग्रामीण समुदायों में भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शहरी आधुनिकता के साथ एकीकृत करने के लिए विज्ञान शिक्षा एक उत्प्रेरक के रूप में. *जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक टेंपर*,12(1), 4-21।

[11] पांडे,एन.आर. (2014). भारतीय ज्ञान प्रणाली एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. *इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च इन एजुकेशन*, 3(3),46-49।

[12] पोलाक,एस.(2021). भारतीय ज्ञान प्रणाली उपनिवेशवाद की पूर्व संध्या पर. *इंटेलेक्चुअल हिस्ट्री न्यूजलेटर लेटर*,38(1), 3-31।

[13] राव, एस.एस. (2006). स्वदेशी ज्ञान संगठन एक भारतीय परिदृश्य. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनफॉरमेशन मैनेजमेंट*, 224-233।

[14] सुरभि,(2024).आधुनिक युग में उच्च शिक्षा में भारतीय शिक्षा प्रणाली के लाभ और प्रासंगिकता.*इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनहैंस्ड रिसर्च इन एजुकेशनल डेवलपमेंट*,12(4), 122-124 ।

Cite this Article:

डॉ. शैलेश कुमार यादव एवं अमरीन शमशुल, " भारतीय ज्ञान प्रणाली का विश्लेषण ", Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS), ISSN: 3048-9423 (Online), Volume 1, Issue 2, pp. 10-14, October-November 2024.
Journal URL: https://nijms.com/

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.